साई बाबा भजन-बंगलयिा मेरी ऐसी बनवइयौ सांई नाथ
बँगलयिा मेरी एसी बनवइयौ सांई नाथ2
जसिमें सारी उमर कटजाय जसिमें सारा बुढ़ापा कटजाय
बँगलयिा मेरी एसी बनवइयौ सांई नाथ

जहां बनाऊँ कुटी में सांई वहीं धाम तेरा होवे
तेरे चरण की धूल उठाऊँ फरि दीवार बनाकर के
लता-पता से बँगला छाना सांई ज़रा दया करके
दरवाज़े पर श्रद्धा लखिना2लखिना सबूरी कविाड़
बँगलयिा मेरी एसी बनवैयौ सांई नाथ

उस बँगले के अन्दर सांई तेरा इक मन्दरि होवे
मन्दरि अन्दर मेरे सांई की इक सुन्दर मूरत होवे
मन भावों का हार बनाऊँ तब इच्छा पूरी होवे
साँझ सवेरे उन भावों का तुमको हार पहनाऊँ
बँगलयिा मेरी.....

भक्तभिाव से भरा हुआ उस बँगले में कुनबा होवे
शमा तात्या हों संग में और भगत म्हालसापतिा होवे
भक्तमंडली वहां वरिाजेऔर लक्ष्मी माई होवे
चारों पहर की होय आरती नति-नति दर्शन होय
बँगलयिा मेरी एसी बनवैयौ सांई नाथ..... ।

गुरूवार के रोज़ वहां सांई तेरा भंडारा होवे
हलुआ पूरी और खचिड़ी का भोग वहां लगता होवे
सांई के हाथों हांडी में भी कुछ पकता होवे
सांई प्रेम से भोग लगावें जूठन मोहे मलि जाय
बँगलयिा मेरी.....

चैत मास में नौंवी के दनि उर्स भरे मेला होवे
यशुदा नन्दन पालने झूलें राम जनम सुन्दर होवे
क्वार मास में मने दशहरा तब उत्सव पूरा होवे
सांई नाथ कि चले पालकी मौं भी नाचूँ गाऊँ
बँगलयिा मेरी एसी बनवैयौ सांई नाथ
जसिमें सारी उमर कटजाय जसिमें सारा बुढ़ापा कटजाय
ब । Bगलयिा मेरी एसी बनवैयौ सांई नाथ